I N D E X

Name Rishi Vijay Std.: XII Sec. A Roll No. 30

Sr. No.	Date	Title	Page. No.	Teacher's Sign./ Remark
1	✓	ताल		
2	✓	तिलवाडा ताल		
3	✓	तीन ताल		
4	✓	धमार ताल		
5	✓	संगीत रत्नाकर		
6	✓	रूपक ताल		
7	✓	ग्राम		
8	✓	चारताल, झपताल		
9	✓	वर्ण		
10	✓	दादरा, कहरवा ताल		
11	✓	आहोबल कृत संगीत परिजात		
12	✓	राग बागेश्री		
13		" " तराना		
14	✓	संगीत रत्नाकर		
15	✓	मूर्च्छना		
16		रागों का समय सिद्धांत		
17	✓	राग मालकौंस		
18	✓	छोटा ख्याल अंतरा		
19		तान		
20.		कण श्रुति		
21		तराना, तान		

Scanned by CamScanner

"ताल"

ताल क्या है ?
भरतमुनि के अनुसार संगीत के काल नापने के लिए साधन को ताल कहते हैं। जिस प्रकार भाषा में व्याकरण की जरूरत रहती है, उसी प्रकार संगीत का प्रमुख पहलु ताल है।

संगीत रत्नाकर के अनुसार ताल वह है जिसमें नृत्य, वाद्य तथा गीत प्रातिष्ठित रहते हैं। प्रातिष्ठित का अर्थ है व्यवस्थित करना व स्थिरता प्रदान करना। भारतीय संगीत मे ताल परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। संगीत मे विभिन्न स्वरों के बीच जो अंतराल होता है उसको नापने के लिए किसी क्रिया की ~~आव~~ आवश्यकता महसूस हुई और ताल का जन्म हुआ। वे अपने आप मे अखंडित तथा व्यापक क्रिया है। इसी अंतराल में बांधकर क्रिया को दर्शाना ताल है। ताल अनेक प्रकार के होते हैं।
जैसे :-
एकताल, दादरा ताल, कहरवा ताल, झपताल तीनताल, तिलवाड़ा ताल, धमार ताल, चारताल आदि।

Scanned by CamScanner

तिलवाडा ताल

तिलवाडा ताल मे 16 मात्राए होती है और 4-4 मात्राओं मे 4 विभाग होते है।
पहली मात्रा पर सम, पांचवी मात्रा पर दूसरी ताली, नवीं मात्रा पर खाली और 13वी मात्रा पर ताली

मात्रा-16, विभाग-4, ताली-1,5,13, खाली-9

	x				2			
मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8
बोल	धा	तिरकिट	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं
दुगुन	धातिरकिट	धिंधिं	धाधा	तिंतिं	तातिरकिट	धिंधिं	धाधा	धिंधिं
	0				3			
मात्रा	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	ता	तिरकिट	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं
दुगुन	धातिरकिट	धिंधिं	धाधा	तिंतिं	तातिरकिट	धिंधिं	धाधा	धिंधिं

Scanned by CamScanner

संगीत रत्नाकर

यह ग्रंथ 13वी शताब्दी के उत्थार्त में पंडित शांरग देव द्वारा लिखा गया था। इसमें नाद, राग, वर्ण, ताल जाति, मुर्च्छना आदि की विभेचना की गई है। उत्तर और दक्षिण के संगीत विद्वान इसे संगीत का आधार मानते हैं। क्योंकि इसमे शांरग देव ने पंडित मृतंग मुनि से अधिक विवरण किया है।

संगीत रत्नाकर ग्रंथ के अध्याय :

1. स्वराध्याय : इसमे नाद स्वरूप नादोत्पत्ति अथवा नाद भेद ~~स्मरण~~ चतुर्थी, मुर्च्छना, ग्राम, राग, ताल, जाति, अलंकार आदि का विस्तृत वर्णन किया है।

२. तालाध्याय : प्राचीन काल मे समय की गति को मापने के लिए इस अध्याय का प्रयोग किया गया है। इसमे राग ग्राम के गुण अथवा दोष का वर्णन किया गया है।

3. रागाध्याय : इसमे शुद्ध स्वर एवं विकृत स्वर 12 माने गए हैं। इस ग्रंथ मे २६४ रागो का विवरण किया गया है।

Scanned by CamScanner

4. प्रबन्धाध्याय : इसमे अनिबन्ध धातु व प्रबन्ध के भेद तथा अंगो का विवरण किया गया है।

5. प्रकीर्णाध्याय : इसमे वाद्यकार के 28 गुणों एवं तालों का पूर्ण रूप से वर्णण / विवेचन किया गया है।

6. वाद्याध्याय : इसमें सुषिर, अवनद्य घन वाद्य के भेद वादन विधी एव अन्या वाद्यो के दोष दिए गए हैं।

7. नर्तनाध्याय - यह अध्याय नृत्य नाट्य, नृत्त पर आधारित है। इसमें रागों का वर्गीकरण रागों के लक्षण के आधार पर किया गया है। इस वर्गीकरण का आधार निश्चित नहीं है।

1. राग - 20
2. ग्राम राग - 30
3. पूर्व प्रसिद्ध भाषांग राग - 11
4. पूर्व प्रसिद्ध उपांग राग - 3
5. पूर्व प्रसिद्ध भाषा राग - 16
6. उपांग - 8

Scanned by CamScanner

"आहोबल कृत संगीत परिजात"

आहोबल कृत संगीत के इस प्रसिद्ध ग्रंथ का रचनाकाल लगभग 1665 ई. का उत्तार्थ माना गया है। सन 1724 ई. में पंडित ~~[illegible]~~ दीनानाथ द्वारा इसका अनुवाद फारसी मे किया गया। इस ग्रंथ में ऐसे अनेक रागों का विवेचन है जो उत्तरी भागों मे ~~प्रचलित~~ प्रचलन मे नहीं है परंतु दक्षिण भागों मे विशेष रूप से प्रचालित है। जिस संगीत पद्धति की विवेचना इस ग्रन्थ मे की गई है वह ठीक उत्तरी संगीत पद्धति की है। इस आधार पर कुछ लोगो ने अनुमान लगाया है कि पंडित आहोबल दक्षिण भारत के निवासी थे और उन्होंने उत्तर भारत आकर यह ग्रन्थ लिखा था। इस ग्रन्थ की विशेष ~~साम~~ सामग्री इस प्रकार है।

1) संगीत परिजात में स्वरो की स्थापना ठीक हृदय कौण से की गई है इसलिए इसका शुद्ध सप्तक हमारे काफी थाट के समान है।

2) संस्कृत ग्रन्थकारो की भांति ही पं. आहोबल ने भी स्वरो को 22 ~~[illegible]~~ श्रुतियों मे विभाजित माना है, और प्राचीन ग्रन्थकारियों की ही भांति उनकी स्थापना की गई है।

Scanned by CamScanner

Page No. 6

"चतुश्चतुश्चतुश्चैव षड्ज मध्यम पंचमा
द्वे द्वे मान्यारो त्रिस्त्री ऋषभ धैवत ॥"

3) प. अहोबल ने अपने ग्रन्थ मे शुद्ध स्वर एव विकृत स्वरो कुल मिलाकर 12 बताए है।

4) श्रुति और स्वरो मे ज्यादा अंतर नही बताया, जबकि प्राचीन ग्रन्थकारो मे बहुत अंतर बताया है।

5) उन्होने अहोबल संगीत पारिजात के अनुसार 29 स्वरो के नामो का उल्लेख किया परंतु उन्होने केवल 12 का ही प्रयोग किया क्योकि अहोबल के अनुसार विकृत स्वरो के समान स्वरो के दूसरे नाम है।

"तीन ताल"

मात्रा - 16
विभाग - 4
ताली - 1, 5, 13
खाली - 9

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8
बोल	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा
दुगुन	धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा
	X				2			

मात्रा	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
दुगुन	धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा
	0				3			

Scanned by CamScanner

"धमार ताल"

धमार ताल मे 14 मात्राएं, 4 विभाग
ताली 1, 6, 11, खाली 8 पर
यह ताल होरी के साथ एकगुन, दुगुन, चौगुन
तथा छगुन के साथ बजाई जाती है।

मात्रा-14, विभाग-4, ताली-1, 6, 11, खाली-8 पर

	x					2	
मात्रा	1	2	3	4	5	6	7
बोल	क	धि	ट	धिं	ट	धा	ऽ
	0			3			
मात्रा	8	9	10	11	12	13	14
बोल	ग	ति	ट	ति	ट	ता	ऽ

Scanned by CamScanner

दुगुन

मात्रा	1 (0)	2	3	4	5	6 (2)	7
बोल	काधि	टधि	टधा	डग	तिट	तिट	ताड

मात्रा	8 (0)	9	10	11 (3)	12	13	14
बोल	काधि	टधि	टधा	डग	तिट	तिट	ताड

Scanned by CamScanner

{ग्राम}

ग्राम ऐसे स्वरो के समूहो को कहते है जो कि मूर्च्छनाओं का आश्रय, ग्राम शब्द समूह को पर्यायवाची है। जिस प्रकार परिवार के लोग मिल-जुलकर मर्यादा में रहे और मर्यादा की रक्षा करते है। उसी प्रकार वादी-संवादी स्वरों का वह समूह है, जिसमे श्रुतियाँ व्यवस्थित रूप में हो और मूर्च्छना आदि का आश्रय हो तो ~~मे हो और~~ उसे ग्राम कहते हैं।
श्रुति से स्वर और स्वर में ग्राम की रचना हुई श्रुतियों की अवस्था बदलने से ग्राम भी बदल जाता है।

ग्राम का मुख्य उद्देश्य स्वरो, श्रुतियों, तान, जाति, राग, और मूर्च्छना आदि का सुव्यवस्थित रूप प्रस्तुत करना है।

ग्राम के प्रकार :

1) षडज ग्राम
2) मध्यम ग्राम
3) गन्धार ग्राम

Scanned by CamScanner

'रूपक ताल'

रूपक ताल मे 7 मात्राए तीन विभाग होते है। 1, 4, 6 पर तालो होती है। इसमे खाली नही होती है। रूपक ताली मे मतभेद है। कोई इसे सम से शुरु मानता है, कोई खाली से

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7
एकगुन	ति	ति	ना	धी	ना	धी	ना
दुगुन	तिति	नाधि	नाधी	नाति	तिना	धीना	धीन
चौगुन	तितिनाधि	नाधीनाति	तिनाधीन	धीनातिति	नाधीनाधी	नातितिना धीनाधीना	
	x			2		3	

Scanned by CamScanner

वर्ण

गाने की क्रिया को वर्ण कहते हैं।

वर्ण के 4 प्रकार होते हैं
1) स्थायी वर्ण
2) आरोही वर्ण
3) अवरोही वर्ण
4) संचारी वर्ण

1) आरोही वर्ण :- नीचे से ऊपर तक स्वरो के चढ़ने या गाने की क्रिया को आरोही वर्ण कहते हैं।
जैसे :- सा, रे, ग, म, प, ध, नी

2) अवरोही वर्ण :- जो वर्ण ऊपर से नीचे की ओर आते हैं वे अवरोही वर्ण कहलाते हैं।
जैसे :- सा, नि, ध, प, म, ग

3) स्थायी वर्ण :- जब एक ही वर्ण बार-बार, ठहर-ठहर कर गाया जाए तो वह स्थायी वर्ण कहलाता है।
जैसे - सा-सा, रे-रे, ग-ग, म-म आदि

4) संचारी वर्ण :- स्थायी, आरोही, अवरोही वर्णों के संयोग को संचारी वर्ण कहते हैं। जब वे सभी उलट पलट कर गए एवं बजाए जाते हैं तो वे

Scanned by CamScanner

अपना एक अलग रंग दिखाते हैं जो कि मधुर होता है।

जैसे, सा, रे, ग, प, म, ग, सा-सा, रे-रे, आदि —.

Scanned by CamScanner

"दादरा"

मात्रा-6, विभाग-2, ताली 1, खाली-4 पर

मात्रा	1	2	3	4	5	6
बोल	धा	धी	ना	धा	ती	ना
दुगुन	धाधी	नाधा	तीना	धाधी	नाधा	तीना
	X			0		

"कहरवा ताल"

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8
बोल-	धा	गे	ना	ति	न	क	धि	ना
दुगुन-	धागे	नाति	नक	धिना	धागे	नाति	नक	धिना
	X				0			

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8
चौगुन	धागेनाति	नकधिना	धागेनाति	नकधिन	धागेनाति	नकधिन	धागेनाति	नक…
	X				0			

Scanned by CamScanner

=> ध्रुपद :- यह एक गंभीर प्रकृति की गायन शैली है। ध्रुपद गाने से गले व फेफड़ो पर जोर पड़ता है। यह पुरुष प्रधान गायन शैली है। इसमे भक्ति रस, ध्यान रस, वीर रस, व श्रृंगार रस की प्रधानता रहती है। ध्रुपद के 4 भाग होते हैं
1. स्थायी, अंतरा, संचारी तथा अभोग।

किन्तु अब स्थायी व अंतरा ही प्रचलन मे है। ध्रुपद मे तान व आलाप नही गाए जाते इसमे लयकारिया दिखाई जाती है, दुगुन, तिगुन चौगुन, पंचगुन छगुन तक गाया जाता है ध्रुपद मे चारताल, तीव्रा ताल, ब्रह्म ताल और सूलताल आदि बजाई जाते है।

=> धमार : गायन शैली का दूसरा प्रकार धमार है। धमार मे ब्रज की होरी और भक्तिरस का आनंद मिलता है इसकी लय मे चापलता होती है। ध्रुपद की तरह इसमे भी लयकारियों को महत्व दिया जाता है इसमे गमक युक्त आलाप व बोलतान का कुशलता से प्रयोग किया जाता है। इसमे धमार ताल का ही प्रयोग किया जाता है।

=> ख्याल : यह शब्द फारसी भाषा का है जिसका अर्थ है, कल्पना। गीत के इस प्रकार मे आलाप, तान, खटका, मुर्कियाँ, कण आदि प्रयोग होता है।

Scanned by CamScanner

Page No. 16

ख्याल गायन में राग की शुद्धता व स्वर सौंदर्य पर अधिक ध्यान दिया जाता है। ख्याल गायन श्रृंगाररस प्रधान होता है।

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

Scanned by CamScanner

मुरकी

मुरकी कण का एक प्रकार है, द्रुत गति से तीन स्वरों को एक अर्ध गोलाई बनाने को मुरकी कहते हैं। इसे लिखने के लिए एक मूल स्वर के बाईं तरफ से दो स्वरों का कण लिया जाता है जैसे [illegible] मधप,

मीड

किसी भी एक स्वर से दो, तीन या चार को आगे या पीछे कोमलता सहित ध्वनि को बिना अखण्डित किए उच्चारण करने या गाने बजाने को मीड कहते हैं। भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में [illegible] मीड को दर्शाने के लिए स्वरों के ऊपर उल्टा अर्ध-चन्द्राकार बनाया जाता है

जैसे प धि

मीड का प्रयोग गायन से तथा तार वाले वाद्यों से होता है। मीड भारतीय संगीत की एक विशेषता है। इसके प्रयोग से गाने बजाने में रस तथा लय पर समावेश होता है।

सा मे

Scanned by CamScanner

{मुर्च्छना}

प० आहोबल के अनुसार जब स्वरों का आरोह अवरोह हो तो उसे मुर्च्छना कहा जाता है। इसी प्रकार
प० शारंग देव कहते हैं कि ग्राम वह स्वर समूह है जो कि स्वर मुर्च्छनाओं का आश्रय है। मुर्च्छना का अर्थ समझने के बाद यह मालूम होना चाहिए कि प्राचीन संगीत पद्धति में प्रत्येक ग्राम से कुल 7 मुर्च्छना बनती थी।

षडज-ग्राम - 7
मध्यम ग्राम - 7
गन्धार ग्राम - 7

21

परंतु गन्धार ग्राम के लुप्त होने जाने के बाद षडज और मध्यम ग्राम ही बचे हैं। मुर्च्छना 3 प्रकार की होती है।

शुद्ध काकलि संहित
सतय ~~काकलि हो~~
अन्तर काकलि सहित

Page No. 19

मूर्छना के लक्षण :- मूर्छना के स्वर क्रमानुसार होते हैं -(ग) से शुरु मूर्छना के बाद म,प,ध,नी,सा और इसी प्रकार अवरोह के स्वर होते हैं।

मूर्छना ग्राम पर आश्रित होती है।

Scanned by CamScanner

रागों का समय सिद्धांत

हमारे परंपरागत संस्कारो का परिणाम रागो का समय सिद्धांत है। भारतीय संगीत की यह निजी विशेषता है कि इसके रागों को गाने का निश्चित समय होता है। प्रत्येक राग निश्चित समय पर गाने पर ही आनंद प्रदान करता है यद्यपि यदा-कदा अपवाद भले ही मिले पर नियम नहीं रहा है। रागों का समय की दृष्टि से निर्धारित करने के लिए निम्न सिद्धांत माने गए है।

1) ऋतुओं के अनुसार समय निर्धारण
2) स्वर संयोग से समय निर्धारण
3) पूर्वांग उत्तरांग पचल राग
4) मध्यम के प्रयोग से समय निर्धारण
5) वादी संवादी समय निर्धारण

1)→ स्वर संयोग से समय निर्धारण :- इस वर्ग में राग में लगने वाले कोमल व शुद्ध स्वरो के अनुसार रागो का समय निर्धारण किया जाता है। इसके तीन वर्ग है।

→ कोमल रे, ध वाले राग
→ शुद्ध रे, ध वाले राग
→ कोमल ग, नि वाले राग

★ कोमल रे, ध, वाले राग :
इस वर्ग के राग 4-7 बजे तक गाये व बजाये

जाते है। यह समय दिन व रात का संधिकाल होता है। इसलिए इस समय गाने वाले राग को सन्धिप्रकाश राग कहते है। यह समय दिन मे २- बार आते है। सुबह 4-7 बजे तक, सुबह के संधि प्रकाश राग मे शुद्ध मध्यम लगता है, जैसे : राग भैरव सांय काल के संधि प्रकाश राग मे तीव्र मध्यम लगता है जैसे राग भैरव और राग पुर्वी

2) शुद्ध रे, ध वाले राग :- संधिप्रकाश वाले रागों के बाद रे,ध, वाले रागों का समय आता है। यह सुबह 7 बजे से 10 बजे तक गने बजाने वाले रागों मे राग अल्हैया बिलावल आदि राग आते है। इसमे शुद्ध रे, ध आता है। 10 बजे तक के रागो मे तीव्र मध्यम लगता है जैसे बिहाग - यमन।

3) कोमल ग, नि वाले राग :- शुद्ध रे, ध वाले रागों के बाद कोमल ग, नि वाले राग आते है। इसका गायन समय प्रातः 10 बजे से दोपहर 4 बजे तक होता है और रात्री काल मे भी 10 बजे से प्रातः 4 बजे तक गाते है और सांयकाली रागो मे भैरवी, काफी आदि राग आते है।

4) मध्यम के प्रयोग का समय निर्धारण :- रागों के समय निर्धारण में मध्यम का स्वर है जैसे राग मे सप्तक के

मध्यम का बहुत महत्त्व स्वर है। जैसे राग यमन दिन के समय; शुद्ध मध्यम वाले रागों का बहुमय होता है परन्तु रात्रि के बढ़ने के साथ साथ तीव्र मध्यम का प्रयोग इतना अधिक बढ़ जाता है कि वह स्वयं ही रात के 12 बजे तक रागों का राजा बना रहता है।

5) वादि संवादि से समय निर्धारण :- जिन रागो के वादि स्वर सप्तक के पुर्वांग मे होता है उन्हे पुर्वांगवादि राग कहते है तथा उनका गायन समय पुर्वार्ध अर्थात दिन के 12 बजे से रात्रि के 12 बजे तक होता है।

6) पुर्वांग और उत्तरांग राग : जिन रागों का पूर्व प्रबल है या जो सप्तक के पूर्व मे ज्यादा गाए जाते है। ये दिन के पुर्वार्ध मे गाए बजाए जाते है, जिन रागों का उत्तरांग ज्यादा प्रबल होता है, वे दिन के उत्तरार्ध मे गाये गाए जाते है। पुर्वांग प्रबल राग भीमपलासी, केदार और उत्तरांग प्रबल राग जौनपुरी बसंत आदि।

7) ऋतुओं के अनुसार समय निर्धारण : कुछ राग विशेष ऋतु मे गाने से अंतरंग आनंद प्रदान करते है ऋतुकालीन राग होने के कारण उन्हे 24 घंटे बजाया जाता है।

Scanned by CamScanner

Date / /
Page No. 23

{राग मालकौंस}

ग, ध, नी स्वर कोमल साजक
औडव - रे - प (त्यात उन्तर)।

शास्त्रीय परिचय :
इस राग को कुछ माल तथा कुछ मालको कह
कर पुकारते हैं यह राग भैरवी थाट से जन्मा
राग है। उसको गन्धार धैवत निशाद
तीनों स्वर कोमल रिषभ तथा पंचम स्वर
तथा वार्जित है। उस 'जि' राग की उत्पत्ति औडव
है। वादि स्वर मध्यम तथा सम्वादि गाने का
समय रात्री का तृतीया प्रहर है।

Scanned by CamScanner

राग मालकौंस
{छोटा ख्याल स्वरलिपी}

आरोह : सा नि सा ग म ध नी सां।
अवरोह : सां नी ध म ग म ग सा।
पकड़ : म ग म ध नी ध म ग सा।

स्थायी

ग ग ग सा	नि सा ध नी	सा म म म	ग म ग म
मो ऽ ऽ मो	ऽ ऽ मु स	का ऽ त जा	ऽ त मु ख
ग म सा सा	ध नी सां सां	सां सां ध नी	ध ग म म
अ ति ध वि	ली ना ऽ रि	च ली प थ	श्रृं गा ऽ र

अन्तरा

ग ग ग ग	म ध ध नी	सां - - -	नी - सां सां
का हु की र	सी ली आ खि	यॉं ऽ म न	भा ऽ यी ऽ
नी - - -	सां - - -	म ध नी सा	ध ध म म
या ऽ वि धि	सु ऽ न्द र	वा ऽ अ कु	ला ऽ ऽ ऽ
स मं गं मं गं सां	सां - - -	नी सं नी ध	नी ध म -
च लो ऽ ऽ जा	ऽ त स ब	स खि या सा	ऽ थ मु ऽ

Scanned by CamScanner

राग बागेश्री

शास्त्रीय परिचय :-

यह राग काफी थाट से लिया गया है। इस राग मे ग नि कोमल लगते हैं। राग बागेश्री के आरोह मे रे और प वर्जित हैं। कुछ विद्वान प स्वर का प्रयोग करते हैं एवं कुछ नहीं करते।
इसलिए इसकी जाति औडव-षाडव है।
इसका वादी 'म', संवादी 'सा' है।
गायन समय - मध्यरात्रि।

प के प्रयोग पर जाति - औडव षाडव सम्पूर्ण
प के वर्जित हो पर जाति - औडव - षाडव

आरोह :- सा नि॒ ध नी॒ सा म ध नी॒ सां।
अवरोह : सां नि॒ ध म ग॒ म ग॒ रे सा।

पकड़ - सा नि॒ ध नि॒ सा, म ध नि॒ ध म, ग॒ म ग॒ रे सा।

ATIONS CHANGE, INCREASING

Date / /
Page No. 26

राग बागेश्री तराना

स्थायी :- तदारे धानी तनन देरेना तनन देरेना।
देरेना तना तदीम तनाना देरेना।
तदारे दानी तानना देरेना तनना देरेना।

अन्तरा :- यलली यलली दीऽऽम तनना तदारे
दानी ताऽऽम तनन।

धाकिट तक, धुम किटतक, धाकिट, धाकिट,
धाकिट, तदारे - - - - ।

Scanned by CamScanner

बड़े गुलाम अली खाँ

बड़े गुलाम अली खाँ का जन्म पंजाब प्रांत के कसूर नामक गाँव के लाहौर जिले में हुआ, 1902 में हुआ। उनके पिता बरख्ख अली खाँ व चाचा काले खाँ। गुलाम ~~अली~~ अली खाँ के तीन छोटे भाई थे।

बरकत, मुबारख, अमान अली खाँ। संगीत में ये बहुत बड़े अलंकार थे। गुलाम अली खाँ ने अपने चाचा काले खाँ से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। पारिवारिक परिस्थितियाँ के कारण उन्हें सरोदवादन सीखना पड़ा।

संगीत का अभ्यास निरंतर चलता रहता है। कुछ दिनों बाद मुम्बई में जाकर उस्ताद सिंधी अली खाँ संगीत की तालीम ली। फिर देश-विदेश में जाकर संगीत सम्मेलन में नाम लिया। इनका प्रिय वाद्य कानून था। कर्ण स्वर लगाने में कानून से पहले विशेष तामील थी। 1961 में उनको लकवे की बिमारी हो गई। 23 अप्रैल को उनकी मृत्यु हो गई।

Scanned by CamScanner

तान

रागों के स्वरों को द्रुत गाने के स्वरों में भी और आलाप में भी बोलने को तान कहते है, तान में गति का विस्तार होता है। आलाप और तान में केवल गति का ही अंतर होता है। आलाप तान द्वारा ही गति की सुन्दरता को उत्पन्न करती है। यह स्वर रचना यानि वह गति काफी समय तक बढ़ाई जा सकती है।

जब तान के बीच में गति के शब्द रख दिए जाते है उसे बोल तान कहते है। जिसे सुनकर मन में आनंद का संचार होता है।

तान के निम्न प्रकार है।

(1) शुद्ध तान : जिस तान में स्वरों का क्रम एक-सा होता है और जिसका आरोह होता है उसे शुद्ध तान कहते है।
जैसे: आरोह : स, रे, ग, म, प, ध, नि, सं।
अवरोह : सं, नि, ध, प, म, ग, रे, स।

(२) कूट तान : जिस तान में स्वरों का क्रम स्पष्ट न हो उसे कूट तान कहते है। हमेशा टेढ़ी-मेढ़ी होती है।
जैसे: स, रे, ग, रे, ध, प।

Scanned by CamScanner

(3.) मिश्र तान : शुद्ध तान और कूट तान इन दोनों के मिलाव को मिश्र कहते है।

(4.) झटके की तान : जब तान दुगुन ताल में जा रही हो और अचानक चौगुन की चाल जाने लगे तो उसे झटके की तान कहते है।

(5.) खटके की तान : स्वरों पर धक्का लगाते हुए ताने की जाए उसे खटका की तान कहते है।

(6.) वक्र तान : यह कूट तान के ही समान होती है। वक्र का अर्थ है – टेढ़ा। जिसकी चाल सीधी सीधी ना हो उसे वक्र तान कहते है।

(7.) अचरक तान : जिस तान में प्रत्येक दो स्वर एक को बोले जाए तो उसे अचरक तान कहते है। जैसे ससस, रेरे रेरे, गग, मम।

(8.) सरोक तान : जिस तान में चार-चार स्वर एक साथ होते हो सरोक तान कहते है।
जैसे : सरेगम, रेगमप, गमपध।

(9.) लड़त तान : जिस तान में सीधी, आड़ी करि प्रकार

की लय मिलती हो उसको लड़त तान कहते हैं।

(10) सपाट तान : जिस तान में क्रमानुसार स्वर तेजी के साथ जाते हो उसे सपाट तान कहते हैं।

(11.) पलट तान : किसी तान को लेते हुए अवरोह कहकर लौट आने को पलट तान कहते हैं।

(12) गिटकरी तान : दो स्वरों के एक साथ शीघ्रता से एक के पीछे दूसरा लगाते हुए ~~क~~ ली जाए। उसे गिटकरी तान कहते हैं।
जैसे : नि, स, निसा, सरे, सरे।

(13.) जबड़े की तान : कंठ के अंत स्थल में आवाज़ निकलकर जबड़े की ~~मदा~~ सहायता से ली जाए उसे जबड़े की तान कहते हैं।

(14.) हलक तान : जीभ के क्रमानुसार भीतर बाहर चलते हुए हलक से ली जाती है उसे हलक तान कहा जाता है।

(15.) बोल तान : जिस तानों में तान के साथ-साथ, गीत के बोल भी बोले जाते हैं मिलकर बोले जाते हैं। विलम्बित लय, मध्यम लय, द्रुत लय, में गाए जाते हैं, उन्हें बोल तान कहते हैं।

Scanned by CamScanner